व्यक्तित्व एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के संदर्भ में विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन

UGC Approved
Section 2f & 12B

आई0आई0एम0टी0, विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)

के अर्न्तगत

शिक्षाशास्त्र में पीएच0 डी0 की उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध की संक्षिप्त रूपरेखा

शोध पर्यवेक्षिका

डा0 रेनु गोयल
एम0एससी0,एम0एड0,
पीएच0डी0 (शिक्षाशास्त्र)
एसोसिएट प्रोफेसर
कॉलेज ऑफ एजुकेशन
आई0आई0एम0टी0, विश्वविद्यालय, मेरठ

शोधार्थी

मनोज कुमार

शोध केन्द्र

कॉलेज ऑफ एजुकेशन

आई0आई0एम0टी0, विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0)

2019

शोध की रूपरेखा

- प्रस्तावना
- शोध कथन
- प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण
- अध्ययन का उद्देश्य
- परिकल्पना निर्माण
- प्रस्तुत शोध की सार्थकता
- साहित्य सर्वेक्षण
- शोध विधि
- शोध का प्रत्याशित सहयोग
- अध्यायवार विवरण
- ग्रंथ सूची

प्रस्तावना

शिक्षा प्रारम्भिक एवं अद्यतन दोनों में समान अर्थ रखती है जिसमें प्रक्रिया एवं परिणाम दोनों अन्तर्निहित है। प्रक्रिया में अनवरत् क्रियाशीलता दिखाई देती है जो अपने उद्‌देश्य को प्राप्त कर परिणाम में परिवर्तित हो जाती है। इसीलिए शिक्षा निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया कही जाती है। शिक्षा का दूसरा पहलू शिक्षक है जो प्रक्रिया के रूप में अध्ययन करता है और परिणाम के रूप में अध्यापन करता है। शिक्षा केवल सूचना नहीं है। शिक्षा जब तक प्रक्रिया के रूप में रहती है तब तक यह सूचना का कार्य करती है और परिणाम में परिवर्तित होते ही ज्ञान का रूप धारण कर लेती है। इसीलिए शिक्षा ज्ञान के पर्यायवाची के रूप में लाई जाती है। ज्ञान का उद्‌देश्य समाधान के रूप में प्रस्तुत होता है और यही उद्‌देश्य शिक्षा का भी है। भारतीय दर्शन में ज्ञान को मुक्ति के संदर्भ में देखा जाता है। उपनिषदों में कहा गया है **''सा विद्या या विमुक्तये''** अर्थात विद्या वह है जो मुक्त करती है। यहां पर विद्या शब्द ज्ञान का समानार्थी है।

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। यह आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। अब यह माना जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति का जन्म गुप्त प्रतिभाओं के साथ होता है। ये गुण उसे जन्म से ही विरासत में मिलते है। शिक्षा की भूमिका इन प्रतिभाओं या क्षमताओं के विकास में निहित है। मानव व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का विकास संतुलित रूप से होना चाहिए। यह सर्वांगीण, स्वस्थ और एकीकृत होना चाहिए।

शिक्षा केवल कुछ सूचनाओं का संग्रह नहीं है। यह सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण में जीवन के माध्यम से अनुभवों का अधिग्रहण है। इसमें शैशवावस्था, बचपन, लड़कपन, किशोरावस्था, यौवन, वृद्धावस्था इत्यादि के दौरान शिक्षा के किसी भी एजेंसी–प्रेस, यात्रा, क्लब, प्रकृति–औपचारिक और अनौपचारिक रूप से प्राप्त सभी ज्ञान और अनुभव शामिल है। इस प्रकार, शिक्षा उन सभी अनुभवों का योग बन जाती है, जो बच्चे को स्कूल में या बाहर प्राप्त होते है। इस व्यापक अर्थ में जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है। जो कुछ भी हमारे क्षितिज को विस्तुत करता है, हमारी अंर्तदृष्टि को गहरा करता है, हमारी प्रतिक्रियाओं को परिष्कृत करता है और विचार और भावना को उत्तेजित करता है, हमें शिक्षित करता है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण में धीरे–धीरे विभिन्न तरीकों को स्वयं अपनाता है। यह व्यक्ति में उन सभी क्षमताओं का विकास है, जो उसे अपने

पर्यावरण को नियंत्रित करने और अपनी संभावनाओं को पूरा करने में सक्षम बनाएगी। शिक्षा, व्यापक अर्थो में, जीवन को जीने से, जीने के लिए, जीने के द्वारा और जीने के लिए जीवन का संचरण है। शिक्षा व्यक्तित्व के संतुलित सर्वांगीण विकास का एक साधन है।

शिक्षा की किसी भी प्रणाली में, शिक्षा के उद्देश्य इसके अन्य पहलुओं जैसे कि इसकी संरचना, पाठ्यक्रम आदि को निर्धारित करते है। जब तक हम इस बारे में पूरी तरह से स्पष्ट नहीं होते है कि बच्चों को शिक्षित करने के माध्यम क्या है, तो वह गलत तरीके से अपनाने की संभावना अधिक हो जाती है। वे दिन गए, जब लोग सोचते थे कि शिक्षा का संबंध केवल ज्ञान प्रदान करने से है। बच्चें के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास का महत्व अब समझ में आया है। ''पूरे बच्चे को शिक्षित करना'' अब उद्देश्य है। इसका क्या मतलब है ? बच्चों को बढ़ने, उनके शरीर और दिमाग को विकसित करने, व्यावहारिक कौशल हासिल करने, सहयोग, सहिष्णुता आदि जैसे कुछ सामाजिक मूल्यों का आत्मसात करने और उनके चरित्र को विकसित करने में मदद की जाती है। यह भी आवश्यक माना जाता है कि प्रत्येक बच्चा जीवन में सुंदर चीजों की सराहना करना और उनका आनंद लेना सीखे, अपने अवकाश को व्यतीत करना सीखें और काम के प्रति दृष्टिकोण और समान्य रूप से जीवन भी बनाएं। संक्षेप में, बच्चे की शिक्षा में उसके संपूर्ण व्यवहार के विकास का संबंध कुछ वांछनीय रेखाओं से है। ''वांछनीय'' यहाँ एक महत्वपूर्ण शब्द है। विभिन्न विषयों के शिक्षण के माध्यम से व्यवहार के वांछित विकास का प्रयास किया जाता है।

शिक्षा का मूल उद्‌देश्य शिक्षार्थी के व्यवहार में उपर्युक्त परिवर्तन लाना है और उसके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास करने में आवश्यक सहायता प्रदान करना होता है। यह स्पष्ट रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षार्थी और शिक्षक व्यवहार परिवर्तन में किस प्रकार अपने आदत का निर्माण करते हैं। इस आदत के निर्माण में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के द्वारा शिक्षार्थी अभिप्रेरित होता है और उसी अभिप्रेरणा के अन्तर्गत उपलब्धि प्राप्त करता है। अभिप्रेरित उपलब्धि अपने उद्‌देश्य की प्राप्ति के द्वारा व्यक्तित्व का विकास करता है। यही व्यक्तित्व का विकास शिक्षार्थी के व्यवहार में उपयुक्त परिवर्तन है। जीवन की हर परिस्थिति में हमें व्यक्ति के विशिष्ट आचरण या व्यवहार शैली का प्रदर्शन देखने को मिलता है। परिवार को चलाने वाला गृहस्थ हो या गृहणी, घर का मुखिया हो या विद्यालय का प्रधानाचार्य या विश्वविद्यालय का कुलपति, कक्षा का संचालन करने वाला शिक्षक हो या कार्यालय का प्रमुख निदेशक तथा देश या समुदाय

का नेता, सभी अपनी अर्न्तक्रिया द्वारा अपने अधीन व्यवस्थाओं एवं व्यक्तियों के लोकाचार तथा कार्य प्रद्धति को प्रभावित करते हैं। इन सभी प्रसंगों में व्यक्ति का व्यक्तित्व एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में उपस्थित होता है।

शिक्षा जगत में व्यक्तित्व शब्द अपना एक विशेष स्थान रखता है। शिक्षा अपने सम्पूर्ण रूप में बालक के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास से प्रयोजन रखती है। अधिकतर बोलचाल की भाषा में व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग शारीरिक डील–डोल, स्वास्थ्य, सौन्दर्य, रूप–रंग आदि बाहर से दिखाई पड़ने वाले तत्वों के संदर्भ में किया जाता है। किसी के गठीले बदन और चमकते चेहरे को देखकर हम कह उठते हैं कि देखों उसका व्यक्तित्व कितना आकर्षक है और किसी सूखी टांगों, पिचके गाल या निश्तेज चेहरे को देखकर उसके व्यक्तित्व को उपेक्षित मानते हैं। प्रायः हम व्यक्तित्व शब्द को व्यक्ति के चरित्र और नैतिकता के पर्यायवाची शब्द के रूप में भी प्रयोग करते हैं लेकिन व्यक्तित्व शब्द को वाह्य रूप तथा आकृति अथवा चरित्र और वाह्य व्यवहार के समान अर्थो में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। किसी भी अवस्था में व्यक्ति के व्यक्तित्व के आन्तरिक पक्ष की अवहेलना नहीं की जा सकती।

उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व बाहरी संगठन न होकर आन्तरिक गुणों के समावेश की मांग करता है। हांलाकि व्यक्तित्व शब्द का अंग्रेजी पर्याय 'परसोनालिटी' अपने शब्दिक अर्थ लैटिन भाषा के 'परसोना' शब्द में भी बाहरी रूप–रंग का संदेश देता है जो कि निश्चित रूप से संकुचित अर्थ ही प्रकट करता है। मनोवैज्ञानिक चिंतन और अन्वेषण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि व्यक्तित्व व्यक्ति के सम्पूर्ण गुणों का एकीकृत और संगठनात्मक रूप है।

व्यक्तित्व में एक प्रकार का अनोखापन होता है जिससे यह पता चलता है कि हर व्यक्ति के कार्य करने की शैली में एक निरालापन होता है। व्यक्तित्व को अनुवांशिकता एवं पर्यावरण दोनों प्रकार के कारकों का प्रतिफल भी कहा जा सकता है जिसमें अर्जित एवं समावेशित दोनों प्रकार के गुण पाये जाते हैं। व्यक्ति जब दूसरों के अनुभवों को शब्दों, निरीक्षण, चिन्तन, मनन द्वारा ग्रहण करता है तथा उनका लाभ उठाता है तो यह प्रक्रिया अध्ययन कहलाती है। व्यक्ति के जीवन में सदैव अध्ययन विद्यमान रहता है चाहें वह पुस्तक का पठन करे या ना करें तब भी अध्ययन प्रक्रिया चलती रहती है। अध्ययन स्वयं में प्रक्रिया एवं परिणाम का संगठन है क्योंकि जब वह दूसरों के बारे में कोशिश करता है तब यह प्रक्रिया के रूप में उपस्थित होता है

किन्तु जब वह अनुभव में समाहित हो जाता है तब वह परिणाम का रूप ग्रहण कर लेता है। इसीलिए ज्ञान को ग्रहण करने की प्रक्रिया का नाम अध्ययन है। अध्ययन का सर्वमान्य अर्थ – उन तथ्यों, विचारों, विषयों, विधियों, समस्याओं आदि का ज्ञान प्राप्त करना जिससे छात्र या व्यक्ति अनभिज्ञ है। विस्तार से यह कहा जा सकता है कि नवीन विषय सामग्री का ज्ञान प्राप्त करने के लिए छात्र द्वारा किया जाने वाला नियोजित प्रयास है। उसका प्रयास एक निश्चित योजना या विधि के अनुसार होता है तभी वह नवीन ज्ञान प्राप्त करने में सफल होते हैं।

अध्ययन के स्वरूप को निर्धारित करने के लिए कुछ तत्वों की आवश्यकता पड़ती है जिसके कारण अध्ययन का स्वरूप स्पष्ट रूप से परिभाषित हो जाता है। अध्ययन कर्ता सरल, उन्नत मस्तिष्क वाला, सकारात्मक नजरिया रखने वाला, तत्पर, प्रतिभाशाली उत्सुक और विवेकशील हो जाता है। इन तत्वों के कारण अध्ययनकर्ता की योग्यता दिनो–दिन बेहतर होती जाती है जिसके कारण उसका अपना परिवेश और आस–पास के वातावरण में एक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अध्ययनकर्ता की पहचान यर्थाथवादी और तीव्र प्रतिभाशाली के रूप में जाना जाने लगता है।

आदत शब्द का प्रयोग साधारण व्यक्ति से लेकर असाधारण प्रतिभा वाले व्यक्ति भी प्रायः करते रहते हैं, क्योंकि हमारे दैनिक जीवन का बहुत सारा भाग आदत के ही आधार पर चलता है। हमारी (मनुष्य) बहुत सी क्रियायें जन्मजात प्रवृत्तियों के कारण होते है। जैसे – सॉप को देखकर भागना, पलायन प्रवृति के कारण होता है जिसे हम सहज क्रिया भी कहते हैं लेकिन आदत स्वाभाविक व सहज प्रक्रिया का नाम नहीं है न ही यह जन्मजात प्रवृति होती है। आदत एक अर्जित प्रक्रिया है जो अभ्यास की बुनियाद पर टिकी है। एक ही क्रिया को बार–बार दोहराने पर आदत का निर्माण हो जाता है। साधारण से लेकर असाधारण मनुष्य भी कुछ न कुछ निजी आदतों का निर्माण कर लेता है। जैसे – तम्बाकू खाना, आंख चमकाना, बीच–बीच में एक ही शब्द का बार–बार प्रयोग करना इत्यादि। बार–बार किसी कार्य को करते रहने पर आदत स्वचालित प्रक्रिया के श्रेणी में आ जाता है जिसके कारण वह क्रिया स्वाभाविक प्रतीत होने लगती है। आदत अपने आप में निरपेक्ष प्रक्रिया का परिणाम है। कार्य की आवश्यकता एवं उसके परिणाम पर किसी भी आदत को सही और गलत ठहराया जाता है।

मनुष्य के जीवन में आदतों का बड़ा महत्व है। हमारे अधिकांश कार्य आदत द्वारा ही प्रेरित होते हैं।

मनुष्य के जीवन की सफलता आदतों के निर्माण में ही है। हमारे दैनिक व्यवहार का बहुत बड़ा भाग आदतों से ही प्रभावित होता है। जाने–अनजाने में हम आदत के अनुसार ही कार्य करने लगते हैं। इन आदतों से हमें बड़ा लाभ होता है जिससे जीवनचर्या सुविधा परक हो जाती है जैसे – साफ सुथरा रहने की आदत पड़ने से सफाई का वातावरण निर्मित होता है, समय से उठने की आदत के कारण ही संयमित जीवन चलने लगता है, शारीरिक एवं मानसिक श्रम करने की आदत से कार्य करने में सुविधा होती है, धैर्य पूर्वक बैठने की आदत से बेहतर कार्य होने लगते हैं, सोच–समझ कर उत्तर देने की आदत के कारण स्वच्छ छवि का निर्माण होता है, पढ़ने में ध्यान लगाने की आदत से शैक्षिक उपलब्धि बेहतर होती है।

व्यक्ति अपने जीवन में अनेक प्रकार का ज्ञान तथा कौशल प्राप्त करता है। इस ज्ञान तथा कौशल में दक्षता प्राप्त करने की क्षमता को उपलब्धि कहते हैं। उपलब्धि से बालकों की सफलता एवं उनकी योग्यता का निर्धारण होता है। उपलब्धि बहुआयामी स्वरूप वाला होता है जिसमें बालकों की परीक्षा में बेहतर अंक प्राप्त करना, बालकों का बुद्धिमान होना, भावनात्मक नियमन प्राप्त करना, खेल–कूद में प्रवीण होना, कला एवं संगीत में निपुण होना, सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना, कुशल नेतृत्व का होना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होना इत्यादि। उपलब्धि बृहद आयामों की ओर संकेत करते हैं, जिससे व्यक्ति बृहत्तर आयामों को प्राप्त करता है। उसकी उपलब्धि विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठ एवं बेहतर परिणामों को देने वाली होती है।

किसी भी कार्य को करने के लिए व्यक्ति के अन्दर छिपी शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार की आन्तरिक शक्ति को देखा नहीं जा सकता है बल्कि जब वह व्यक्ति कार्यो के निष्पादन के दौरान अपनी उत्तेजना व्यवहार में परिलक्षित करता है तो यह अनुमान लगाया जाता है कि यह आन्तरिक शक्ति का उद्घाटन है। इसी आन्तरिक शक्ति को उत्तेजना में बदलने वाले कारक को अभिप्रेरणा की संज्ञा दी गयी है। इस प्रकार की अभिप्रेरित शक्तियां किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने और उसे नियमित रखने के लिए व्यक्ति को हमेशा गत्यावस्थ में रखना चाहती है। अभिप्रेरणा शब्द की उत्पत्ति भी गति से हुई है। यदि हम इसके अंग्रेजी शब्द के आधार पर व्याख्यित करेंगे तो यह **''मोशन''** शब्द से बना है। अभिप्रेरणा बालकों को किसी भी कार्य को करने के लिए अन्दर से अभिप्रेरित करती है। यह सकारात्मक भी हो सकती है या नकारात्मक भी हो सकती है। सकारात्मक अभिप्रेरणा बालकों को उनकी इच्छा के अनुसार लक्षित उपलब्धि

व लक्ष्यों की ओर ले जाती है और उन्हें सुख और संतोष प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर नकारात्मक अभिप्रेरणा किसी वाह्य प्रभाव के चपेट में आकर बालकों को अपने वांछित लक्ष्य से भटका देती है और यह उनके जीवन में कुंठा, निराशा और निन्दा का कारण बनती है।

उपलब्धि कुछ लक्ष्यों की सफल प्राप्ति के लिए एक सामान्य शब्द है, जिसमें एक निश्चित प्रयास की आवश्यकता होती है। यह स्कूली विषयों में अर्जित ज्ञान और कौशल है जो आम तौर पर परीक्षा और परीक्षाओं में प्राप्त अंको द्वारा इंगित किया जाता है। यह उपलब्धि हमारे द्वारा किये गये लगातार प्रयास का प्रतिफल है।

उपलब्धि प्रेरणा को "उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने की प्रवृत्ति" के रूप में परिभाषित किया गया है। इसे उत्कृष्टता के लिए चिंतन के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। व्यक्ति की ओर से उत्कृष्टता के मानक के अनुसार प्रदर्शन करने या प्रतिस्पर्धी स्थिति में सफल होने की इच्छा के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। इस उद्येश्य से प्रभावित व्यक्ति आमतौर पर सक्रिय होते हैं, कड़ी मेहनत करते हैं, उच्च लक्ष्य निर्धारित करते हैं, चुनौतीपूर्ण कार्य करते हैं, कठिन चीजों को करने से सुख प्राप्त करते हैं और गुणवत्ता की प्रशसा करते है। उनके मन में एक मानक हो सकता है, जिसके साथ वे अपनी तुलना करते रहते हैं, वे कार्यों को पूरा करने का सपना देखते हैं।

उपलब्धि प्रेरणा उपलब्धि और सीखने के लिए प्रासंगिक हमारे व्यवहार को नियंत्रित करती है। उपलब्धि प्रेरणा की समझ का मानव जीवन के कई पहलुओं पर प्रभाव पड़ता है, जिसमें यह भी शामिल है कि व्यक्ति कैसे नए कौशल का विकास करता है, और वह मौजूदा कौशल का उपयोग कैसे करता है, फलस्वरूप वे हमे उपलब्धि प्रेरणा की प्रकृति और विकास से संबंधित महान सैद्धांतिक और व्यावहारिक महत्व पर ले जाता हैं।

एक छात्र एक परीक्षा में उच्च अंक का लक्ष्य निर्धारित कर सकता है। लक्ष्यों को प्राप्ति करना निजी जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रतिफल दे सकता है। ठीक–ठीक यह जानना कि कोई क्या हासिल करना चाहता है, वह स्पष्ट करता है कि किस पर ध्यान केंद्रित करना और सुधार करना है और अक्सर अवचेतन रूप से उस लक्ष्य को प्राथमिकता देता है। लक्ष्य निर्धारण और योजना दीर्धकालिक दृष्टि और अल्पकालिन प्रेरणा

को बढ़ावा देती है। यह इरादे, इच्छा, ज्ञान के अधिग्रहण पर ध्यान केंद्रित करता है और संसाधनों को व्यवस्थित करने में मदद करता है। बुद्धि और प्रेरणा का संयोजन जितना अधिक होगा, उपलब्धि उतनी ही अधिक होगी। इसलिए, सार्वजनिक स्वीकृति के साथ वैज्ञानिक मूल्यांकन के माध्यम से किसी व्यक्ति को उसके उच्च मूल्यों और उद्येश्यों के संबंध में प्राप्त करने या सफल प्रदर्शन करने के कार्य को उपलब्धि माना जाता है। किसी भी प्रकार के सतत विकास में, उद्येश्यों के तीन सेट होने चाहिए – ज्ञान, कौशल और मूल्य, जो पूरी प्रतिबद्धता और कड़ी मेहनत के साथ अपने उद्येश्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, उनके लिए उपलब्धि संभव है।

डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन कार्टर के अनुसार, ''उपलब्धि अभिप्रेरणा स्कूल के विषयों में प्राप्त ज्ञान या कौशल है जो आमतौर पर टेस्ट स्कोर, शिक्षक या दोनों द्वारा दिए गए अंको द्वारा निर्धारित किया जाता है''। डिक्शनरी ऑफ साइकोलॉजी चैपलिन, 1965) ने ''उपलब्धि अभिप्रेरणा को शैक्षणिक कार्य में विशिष्ट स्तर की उपलब्धि या प्रवीणता के रूप में परिभाषित किया है, जैसा कि मानकीकृत परीक्षण या दोनों के संयोजन द्वारा छात्र द्वारा मूल्यांकन किया जाता है''। दुनिया में दिनो–दिन अधिक से अधिक प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है। व्यक्तिगत प्रगति के लिए प्रदर्शन की गुणवता महत्वपूर्ण कारक बन गई है। छात्रों को उनके शैक्षिक प्रयासों में बेहतर हासिल करने के लिए स्कूलों में बिताये गये समय और व्यक्तिगत प्रयास का उपयोग किया जाना चाहिए।

क्रो एंड क्रो ने ''उपलब्धि अभिप्रेरणा को उस सीमा तक परिभाषित किया है जिस हद तक एक शिक्षार्थी सीखने के लिए दिए गए क्षेत्र में निर्देशों से लाभान्वित हो रहा है, यानी उपलब्धि उस सीमा से परिलक्षित होती है, जिस हद तक उसे कौशल या ज्ञान प्रदान किया गया है।'' शैक्षिक उपलब्धि पाठ्यचर्या के विषयों में सीखने की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप प्राप्त उपलब्धि का स्तर है और यह परीक्षा में प्राप्त अंकों के संदर्भ में मापा जाता है।

मिट्जेल के अनुसार ''उपलब्धि अभिप्रेरणा को अक्सर अभिक्षमता की अवधारणा के संबंध में परिभाषित किया जाता है, शिक्षा के निश्चित पाठ्यक्रम के दौरान होने वाली परीक्षा एक उपलब्धि परीक्षण है।''

कार्टर के अनुसार, उपलब्धि अभिप्रेरणा का अर्थ है ''विद्यालय के विषयों में प्राप्त ज्ञान या विकसित कौशल, आमतौर पर परीक्षण में प्राप्त अंको द्वारा या शिक्षकों द्वारा अवलोकन के उपरान्त दिये गये ग्रेड से है।

आधुनिक समय में उपलब्धि अभिप्रेरणा एक सापेक्षिक सम्प्रत्यय के रूप में उपस्थित हुआ है। वैसे तो अभिप्रेरणा का स्वरूप नितान्त व्यक्तिगत है लेकिन उपलब्धि अभिप्रेरणा का उद्‌देश्य उपलब्धि प्राप्ति ही है। जब किसी विद्यार्थी की इच्छा कक्षा में मॉनिटर बनने, फुटबाल टीम का प्रतिनिधित्व करने की हो तो उसका उद्‌देश्य अपने निष्पादन कार्य के पुरस्कार की ही अपेक्षा रखती है। इस प्रकार उपलब्धि अभिप्रेरणा का उद्‌देश्य और परिणाम मूल्यांकित निष्पादन ही है जिसमें सफलता और सम्मान का ही भाव समाहित होता है जिसको प्राप्त करने पर आत्म सन्तुष्टि मिलती है। वैसे तो अभिप्रेरण अपने आप में अलग अभिप्राय और अर्थ रखती है लेकिन कहीं न कहीं उपलब्धि के साथ अर्न्तग्रथित है क्योंकि अभिप्रेरित व्यक्ति उपलब्धि से प्रभावित होता है और उपलब्धि प्राप्त व्यक्ति अभिप्रेरित होता है। इससे ये पता चलता है कि इन दोनों का अन्योनाश्रय सम्बन्ध है। जैसे – यदि कोई विद्यार्थी किसी विषय की परीक्षा देता है तो उसका उद्‌देश्य उस विषय में सफलता प्राप्त करना ही है। सफलता उपलब्धि के रूप में प्राप्त होती है और उस उपलब्धि से वह विद्यार्थी अभिप्रेरित होता है। साधारणतया देखने पर सफलता प्राप्त करने की पूर्व की अभिप्रेरणा कहीं न कहीं उपलब्धि को ध्यान में रखकर ही थी और सफलता प्राप्त कर लेने के बाद भी उपलब्धि ही अभिप्रेरित करता है। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि उपलब्धि एवं अभिप्रेरणा में गहरा अर्न्तसम्बन्ध है।

व्यक्तित्व अनेक तरह की विशिष्टताओं का संगठन है जिसके विकास के लिए कुछ आवश्यक नियमों का पालन करना अनिवार्य हो जाता है। इन आवश्यक नियमों के अन्तर्गत निरन्तर अध्ययन की प्रक्रिया और उससे उत्पन्न निष्कर्ष आदत के रूप में परिवर्तित हो जाता है। यही अध्ययन आदत अपने क्रिया और परिणामों दोनों रूपों में प्रतिफलित होती रहती है, जिसके कारण व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास में सहायक होती है। व्यक्ति के इन विकसित रूपों में व्यक्तित्व का सुगठित स्वरूप प्रकट होता रहता है और एक चक्र का निर्माण होता है जिसमें निरन्तर अध्ययन से आदत का निर्माण, निर्मित आदत से व्यक्तित्व पर प्रभाव और प्रभावशाली व्यक्तित्व से पुनः अध्ययन की प्रक्रिया और अध्ययन की प्रक्रिया से आदत का निर्माण एक पूर्ण चक्र चलता रहता है जिससे व्यक्तित्व का विकास होता रहता है। इस प्रकार

व्यक्तित्व के विकास में अध्ययन आदत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और निश्चित उद्देश्य को प्राप्त करते हैं।

अध्ययन आदत प्रक्रिया और परिणाम के रूप में उपलब्धि की ओर इशारा करती है क्योंकि परिणाम स्वयं में उपलब्धि है। अध्ययन से आदत का निर्माण होता है और आदत से उपलब्धि की प्राप्ति होती है। इस उपलब्धि से व्यक्ति अभिप्रेरित होता है और अभिप्रेरित व्यक्ति अध्ययन के लिए तत्पर हो जाता है। अध्ययन की यह तत्परता उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करती है जिससे व्यक्ति अपने कार्य निष्पादन में उच्च मूल्य को प्राप्त करता है और यही प्राप्ति लगातार अध्ययन के लिये प्रेरित करती है।

किसी भी कार्य को करने के लिए एक ऊर्जा की आवश्यकता होती है और उसी ऊर्जा से कार्य का सम्पादन होता है। यही ऊर्जा निरन्तर व्यक्ति को प्रेरित करने का कार्य करती है जिसको मनोवैज्ञानिक भाषा में "**अभिप्रेरणा**" के नाम से जाना जाता है। अभिप्रेरणा स्वयं में कोई अर्थ नहीं रखती जब तक कि उसकी दिशा निर्धारित न हो। दिशा का निर्धारण किसी न किसी उद्देश्य की ओर संकेत करता है। वैसे तो जीवन के वृहद आकाश में अनेक उद्देश्य हो सकते हैं और उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरणा की आवश्यकता होती है। यहां पर उद्देश्य परिणाम की अपेक्षा रखता है और परिणाम से अर्थ उसकी उपलब्धि ही है और यही उपलब्धि व्यक्ति के व्यक्तित्व को निर्मित करने में सहायता प्रदान करती है। व्यक्ति जितना अभिप्रेरित होगा उसकी उपलब्धि का स्तर उतना ही श्रेष्ठ होगा और उपलब्धि का स्तर जितना श्रेष्ठ होगा उतना ही श्रेष्ठ व्यक्तित्व का निर्माण होगा और श्रेष्ठ निर्मित व्यक्तित्व अभिप्रेरित उपलब्धि को निष्पादित करता रहेगा। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अभिप्रेरणा और उपलब्धि का अभिप्रेरित व्यक्तित्व का एक दूसरे से गहरा सम्बन्ध है जिसमें एक दूसरे के पूरक के रूप में उपस्थिति अनिवार्य है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अभिप्रेरित उपलब्धि एवं व्यक्तित्व के विकास में अन्योनाश्रय सम्बन्ध है।

मनुष्य का व्यक्तित्व अनेक तत्वों का संगठन है जिसमें शारीरिक बनावट, मानसिक संरचना और बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ चेतना के उत्कर्ष भी समाहित हैं। शरीर को सुगठित और सुडोल बनाने के लिए जीव वैज्ञानिक नियमों के अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है और उस अध्ययन के अभ्यास के निर्माण के लिए स्वच्छ अध्ययन की आदत की आवश्यकता पड़ती है। आदत के निर्माण में अभिप्रेरणा की आवश्यकता है और अभिप्रेरणा उपलब्धि की अपेक्षा रखती है और अभिप्रेरित उपलब्धि सुन्दर और सुगठित

व्यक्तित्व का निर्माण करती है। अध्ययन आदत से व्यक्ति अभिप्रेरित होता है और अभिप्रेरित व्यक्ति उपलब्धि को प्राप्त करता है। उपलब्धि स्वयं में अभिप्रेरणा को निर्मित करती है और यह आदत के साथ मिल कर अध्ययन को दिशा देती है जिससे व्यक्तित्व का विकास एक निरन्तर एवं एक निश्चित दिशा में होता रहता है। अध्ययन की क्रिया आदत को निर्मित करती है और आदत की क्रिया अध्ययन को अभिप्रेरित करती रहती है। अभिप्रेरणा की क्रिया उपलब्धि को प्रेरित करती है। उपलब्धि की क्रिया व्यक्तित्व को अभिप्रेरित करती है। इस क्रम में स्पष्ट रूप से अन्तर्क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है जो एक दूसरे को प्रभावित व पोषित करते रहते हैं जिससे सम्यक व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

शोध कथन

व्यक्ति के विकास में अनेक कारको का योगदान होता है जिनमें महत्वपूर्ण कारक के रूप में अध्ययन की आदत विकसित करना महत्वपूर्ण होती है लेकिन इन सभी को उचित दशा एवं दिशा देने का कार्य अभिप्रेरणा का कार्य होता है। इन सब के रहने के बावजूद उपलब्धि का अभाव होने पर इन सब का लक्ष्य अधुरा ही रह जाता है। प्रस्तुत संदर्भ में अध्ययन आदत के महत्व को रेखांकित करते हुए व्यक्तित्व एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन करना ही प्रस्तुत शोध विषय की समस्या है। उपर्युक्त के संबंध को रेखांकित करते हुए प्रस्तुत प्रकरण– **''व्यक्तित्व एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के संदर्भ में विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन''**शोध विषय की मुख्य समस्या है।

शोध में प्रस्तुत शब्दों का परिभाषीकरण

व्यक्तित्व :– व्यक्तित्व शब्द व्यक्ति में त्व प्रत्यय लगाने से बना है जिसमें व्यक्ति संज्ञा और व्यक्तित्व विशेषण है। व्यक्तित्व शब्द की शाब्दिक जानकारी लेने पर हम जानते हैं कि व्यक्ति की विशेषताएँ ही व्यक्तित्व होती है। व्यक्तित्व शब्द किसी ऐसे गुण या विशेषता को विशेष ढंग से बताता है, जिसमें हर हालात में उसे आपसी संबंधों की जानकारी मिलती है। यही उस आदमी को अलग–अलग तरह से हँसमुख, आकर्षक, डरपोक, दब्बु किस्म के व्यक्तित्व के रूप में परिभाषित करते हैं।

अध्ययन :– अध्ययन शब्द संस्कृत भाषा के 'अध्ययनम्' से बना है जो 'अधि+इ+ल्युट्' उपसर्ग एवं प्रत्ययों को जोड़कर बना है, जिसका अर्थ जानना या पढ़ना' होता है। अध्ययन शब्द के लिए अंग्रेजी भाषा में Study शब्द का प्रयोग होता है। Study शब्द लैटिन भाषा के

Studium से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ Show zeal for examine या Eagarness होता है। यदि इन दोनों भाषाओं के शब्दों का व्युत्पत्तिपरक अर्थ देखा जाये तो कहीं ना कहीं सीखने का ही आभास होता है जिसमें उत्साह समान रूप से पाया जाता है।

आदत :– आदत शब्द अंग्रेजी भाषा के Habit शब्द का पर्याय है। Habit शब्द लैटिन भाषा के Habitus से लिया गया है जिसका अर्थ किसी चीज को प्राप्त करना होता है। आदत उस व्यवहार का नाम है जो बार–बार दोहराये जाने के कारण स्वचालित रूप से होने लगता है।

उपलब्धि :– उपलब्धि शब्द संस्कृत भाषा के 'उप+लभ्+क्तिन' प्रत्यय से मिलकर बना है जिसमें मूल शब्द लभ् का अर्थ प्राप्त करना या ग्रहण करना होता है। इस प्रकार उपलब्धि शब्द का अर्थ 'प्राप्ति' या 'ग्रहण' सार्थक महत्व रखता है। उपलब्धि का प्रयोग विद्यार्थियों के सफलता या असफलता के बारे में जानने की एक विधि है।

अभिप्रेरणा :–अभिप्रेरणा शब्द अंग्रेजी भाषा के Motivation शब्द का पर्याय है। Motivation शब्द लैटिन भाषा के 'Moveare' शब्द से लिया गया है। इसका मायना 'सक्रिय करना' या 'गतिशील करना' होता है। इस प्रकार अभिप्रेरणा का अर्थ अपने लक्ष्य को प्राप्ति करने की गतिशीलता ही अभिप्रेरणा कहलायेगी।

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी विषय की स्पष्टता के लिए उसके उद्देश्य का होना आवश्यक होता है। इसी कम में प्रस्तुत शोध के विषय **''व्यक्तित्व एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के संदर्भ में विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन''** के संदर्भ में यह आवश्यक है कि इसकी गहराई से जांच पड़ताल करते हुए शोध विषय को स्पष्ट करना। व्यक्तित्व के विकास में अध्ययन आदतो की भूमिका का निर्धारण उपलब्धि अभिप्रेरणा के बिना अधुरी है। उपलब्धि अभिप्रेरणा का प्रभाव अध्ययन आदत पर किस प्रकार पड़ता है तथा उससे व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के विकास में किस प्रकार सहायता मिलती है। प्रस्तुत शोध में इन सभी पहलुओ को दिखाना ही शोधार्थी का उद्देश्य है। प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं नगरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं नगरी विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं नगरी विद्यार्थियों के अध्ययन आदत का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं नगरी विद्यार्थियों के अध्ययन आदत के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन आदत का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन आदत के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं उपलब्धि अभिप्रेरणामें सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
10. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदत में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
11. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा में सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पना निर्माण

किसी भी अनुसंधान की समस्या के चयन के उपरांत यह अनुमान लगाना आवश्यक हो जाता है कि इस समस्या का कारण क्या है ? अनूसंधान की प्रक्रिया की यह महत्वपूर्ण स्तम्भ है जिसमें परिकल्पना का निर्माण होता है। परिकल्पना के निर्माण के बिना न तो कोई प्रयोग हो सकता है और ना ही कोई वैज्ञानिक विधि से अनुसंधान ही संभव है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध के अग्रलिखित परिकल्नाएँ हैं :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं नगरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के बीच सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं नगरी विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच सार्थक अंतर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं नगरी विद्यार्थियों के अध्ययन आदत के बीच सार्थक अंतर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं नगरी विद्यार्थियों में अध्ययन आदत के विभिन्न आयामों के बीच सार्थक अंतर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व के बीच सार्थक अंतर नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के उपलब्धि अभिप्रेरणा के बीच सार्थक अंतर नहीं है।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के अध्ययन आदत के बीच सार्थक अंतर नहीं है।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में अध्ययन आदत के विभिन्न आयामों के बीच सार्थक अंतर नहीं है।
9. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सहसम्बन्ध नहीं है।
10. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदत में कोई सहसम्बंध नहीं है।
11. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के अध्ययन आदत एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा में कोई सहसम्बन्ध नहीं है।

प्रस्तुत शोध की सार्थकता

किसी भी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया की सार्थकता उसके मूल्य अथवा महत्व की ओर संकेत करता है। जिस भी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया का जितना मूल्य बढ़ता जाता है उतना ही वह महत्वपूर्ण होता जाता है और महत्व के बढ़ोत्तरी के साथ ही उसकी सार्थकता बढ़ती जाती है। प्रस्तुत शोध में व्यक्तित्व के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन आदत और उपलब्धि अभिप्रेरणा किस प्रकार मूल्यवान हो जाते हैं, इसी को रेखांकित करते हुए

उनका महत्व दिखाना है। प्रस्तुत शोध उपलब्धि अभिप्रेरणा को अध्ययन आदत के संदर्भ में देखते हुए व्यक्तित्व को पुनर्परिभाषित करने का एक स्तुत्य प्रयास है जिससे व्यक्तित्व का मूल्य एवं महत्व बढ़ जाता है और सामाजिक एवं अकादमिक दोनों दृष्टियों से मूल्यवान हो जाता है, जिसके कारण इसकी सार्थकता स्वयं सिद्ध हो जाती है। इसलिए प्रस्तुत शोध नवीन संदर्भों में अपने आप को व्याख्यायित करते हुए सार्थकता प्राप्त करता है। यही इस शोध का गन्तव्य एवं उद्देश्य है।

साहित्य सर्वेक्षण

अनुसंधान एक सृजनात्मक कार्य है जिसमें बौद्धिक प्रक्रिया का प्रयोग करते हुए अनुभव की सहायता से पूर्व में किये गये कार्यो के आलोक में वर्तमान में उसकी सार्थकता एवं प्रासंगिकता निर्धारित की जाती है। किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिए पूर्व में किये गये कार्य के अवलोकन के बिना अपने कार्य को सम्पन्न करना संभव नहीं होता है। अपने शोध कार्य की पूर्ति एवं सार्थकता को रेखांकित करने के लिए अनेक पुस्तको, शोध–ग्रंथो, सामाचार पत्रो, पत्र–पत्रिकाओ, कार्यालयी अभिलेखो एवं इंटरनेट के प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोत के रूप में उपयोग करते हुए लक्षित उद्देश्य तक पहुंचना शोधार्थी का ध्येय होता है।

भारतीय एवं पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा जुटाये गये जानकारी साहित्य पुनर्निरीक्षण निम्नलिखित हैं:–

1. Nalini, Ganesh Bhatta (2009) – "Study habit and Student Achievement in relation to some influencing factors" इन्होंने देहरादून के माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों के अध्ययन के उपरान्त यह पाया कि अध्ययन आदत और छात्र उपलब्धि के बीच सामाजिक आर्थिक स्तर, अधिगम पर्यावरण, विद्यालयीय बौद्धिक समायोजन में सम्बन्ध है। शोधकर्त्ता ने अध्ययन आदतों और इनको प्रभावित करने वाले कारकों के बीच सार्थक सम्बन्ध पाया।
2. Amirthagowri, Siva Kumar (2009) – "Relationship between study habits and academic achievement of post graduate students" तिरूचंदूर गोविन्दमल महाविद्यालय के 100 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों पर अध्ययन किया जिसमें पाया कि अध्ययन आदतों और अकादमिक उपलब्धियों में सार्थक सम्बन्ध है।
3. **जैन, गणेश लाल (1990)** ने **"राजस्थान के शहरी तथा ग्रामीण किशोर बालिकाओं के व्यक्तित्व लक्षणों के तथा आकांक्षाओं के स्तर तथा मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन"** शीर्षक पर शोध कार्य किया जिसमें ग्रामीण किशोर बालिकाओं के आनन्द मूल्यों तथा धार्मिक

मूल्य पर अधिक अंक प्राप्त करना पाया गया जबकि शहरी किशोर बालिकाओं में स्वास्थ्य मूल्य, लोकतांत्रिक मूल्य पर अधिक अंक प्राप्त करना पाया गया। शहरी व ग्रामीण बालिकाओं में यदि सामाजिक मूल्य उच्च थे तो वे बुद्धिमान पाये गये।

4. **राबर्ट, एल. विलियम्स (1996)** ने **"शैक्षिक उपलब्धियों को व्यक्तित्व मापन पर प्रभाव का अध्ययन"** शीर्षक पर शोध कार्य किया गया जिसमें पाया गया कि श्रेष्ठ शैक्षणिक उपलब्धियों का होना सकारात्मक व्यक्तित्व घटकों को दर्शाता है। उच्च शैक्षणिक उपलब्धियों, निजी प्रबंधन, समय प्रबंधन एवं व्यक्तित्व प्रबंधन की बढ़ोत्तरी का कारक होना पाया गया।
5. **आमेटा, प्रमोद (2017)** ने **"माध्यमिक स्तर पर उच्च एवं निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की एक तुलनात्मक अध्ययन"** शीर्षक पर अपनी शोध प्रस्तुत की जिसमें उसने पाया कि राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदत की अपेक्षा छात्राओं की अध्ययन आदत अच्छी थी। वहीं निजी माध्यमिक विद्यालय की छात्रों की अपेक्षा छात्राओं में अध्ययन आदत उच्च पायी गयी।
6. **गुप्ता, आर. एस. (1966)** ने **''बच्चों के व्यक्तित्व कारकों एवं शैक्षिक उप लब्धियों के बीच संबंधों का अध्ययन"** के निष्कर्ष में व्यक्तित्व कारक शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं तथा निम्न व्यक्तित्व के कारकों व शैक्षिक उपलब्धि में सह संबंध निष्कर्ष रूप में पाया गया।

शोध विधि

वैसे तो विधि शब्द से ही यह ध्वनित होता है कि किसी तरीका या ढंग के बारे में बात हो रही है। इसलिए ऐसा साफ–साफ कहना उचित है कि विधि तथा तरिका में बिना किसी भी कार्य को करना लगभग असंभव होता है। इसलिए शोध कार्य में भी विभिन्न शोध विधियों की अपेक्षा होती है। अनुसंधान में अनेक तरिका का प्रयोग किया होता है लेकिन विषय की आवश्यकता एवं उपयोग के आधार पर प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत वर्णात्मक शोध विधि का प्रयोग किया जायेगा।

जनसंख्या

जनसंख्या बहुत सारी गणनाओं का प्रतिफलन है कि जो ढेर सारे जोड़ों के योग में जानकारी के लिए रखा जाता अर्थात् सार्वभौम का वह भाग जिसका अनुसंधानकर्त्ता उपयोग करना चाहते हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए झारखण्ड राज्य के गढ़वा जिले के राजकीय मीडिल स्कूल के 10वीं दर्जा को लिया गया है। गढ़वा जनपद के अन्तर्गत कुल 126 माध्यमिक विद्यालय संचालित हैं।

न्यादर्श

एक अंश के आधार पर सम्पूर्ण तथ्य के बारे में ज्ञान लेने की प्रक्रिया को न्यादर्श कहते हैं। कुछ को देखकर या परीक्षाकर सबके बारे में अनुमान लेने की विधि को न्याय दर्शन कहते हैं और इन्हीं जनसंख्या में से अध्ययन के लिए चयन किये गये प्रतिनिधियों के समूह को न्यादर्श कहते हैं। नमूना सम्पूर्ण आबादी में छाँटी गई कुछ ऐसी मात्रकों का जोड़ है जो कि पूरी आबादी के गुणों को दर्शाता है। शोध कार्य की सफलता लिये गये न्यादर्श में ही निहीत है जो कि सभी सांख्यिकीय गणनाओं का मूल आधार है। प्रस्तुत शोध के लिए न्यादर्श के आकार में जनसंख्या का आकार 12–15 प्रतिशत के बीच होगा। इसके लिए गढ़वा जिले के 10 शहरी क्षेत्र के तथा 10 ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों को अपने मन से लिया गया है। इसके लिए प्रदत्तों में छात्र–छात्राओं की संख्या का आकार समान होगा। प्रस्तुत शोध में शहरी – ग्रामीण और भाषायी बाध्यता नहीं स्वीकार की जायेगी।

प्रयुक्त शोध उपकरण

कोई भी पेरशानी जानने के लिए नई तथा बिना जानकारी के दी सामग्री को इकट्ठा करने के लिए तमाम तरिकों को अपनाया जाता है। हर तरह के खोज में किसी भी प्रकार के आंकड़ों के मापन के लिए एक अच्छे योग्य उपकरण की आवश्यकता होती है। शोधकर्त्ता अपनी शोध परिकल्पनाओं के पक्ष या विपक्ष के प्रमाण या साक्ष्य जुटाने हेतु जिन आधारभूत साधनों को उपयोग में लाता है, वे ही शोध–उपकरण कहलाते हैं। अनुसंधान प्रक्रम में समस्या समाधान हेतु प्रतिदर्श चयन तथा परिकल्पनाओं के निर्माण के पश्चात् परिकल्पनाओं की पुष्टि हेतु प्रकृति के अनुरूप उपकरणों का चयन होता है। सब तरह के औजार खास तरह के अंकों के लिए ठीक होता है। विभिन्न उद्देश्यों के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के उपकरण उपयुक्त होते हैं। उपकरणों के चयन में उसकी विश्वसनीयता, वैधता तथा वस्तुनिष्ठता का ध्यान रखना अति आवश्यक होता है ताकि वह प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों को पूर्ण करने में सक्षम हो। उपकरण चयन के इन सिद्धान्तों के अलावे कुछ व्यवहारिक बातों का भी ख्याल रखना आवश्यक होता है जैसे– प्रश्नों की संख्या कम से कम हो जिससे विद्यार्थियों को बोझिल न लगे, उपकरण कम खर्चीला हो, उपकरण के प्रशासन, अंक वितरण, आँकड़ों की छान–बीन में सरलता हो।

उपकरण चयन के विभिन्न सिद्धान्तों का ख्याल रखकर शोधकर्त्ता ने शोध–समस्या के समाधान हेतु मनोवैज्ञानिक पद्धति द्वारा बनाये गये तीन उपकरणों का प्रयोग करेगा जो निम्नलिखित है :–

1. **प्रतिभा देव और आशा मोहन द्वारा निर्मित उपलब्धि अभिप्रेरणा मापन प्रपत्र।**
2. **वाइ. सिंह और एच. एम. सिंह द्वारा निर्मित व्यक्तित्व परीक्षण प्रपत्र।**
3. **एम. एन. पलसाने और ए. शर्मा द्वारा निर्मित अध्ययन आदत परीक्षण प्रपत्र।**

सांख्यिकी विश्लेषण तकनीक

संख्या शास्त्र की छान–बीन, वैज्ञानिक जानकारी की वह शाखा है, जिसमें पूर्व निश्चित लक्ष्यों के अनुसार सर्वेक्षणों एवं प्रयोगों के आधार पर प्राप्त आँकड़ों को जुटाना वर्ग के अनुसार विभाग करना छान–बीन तथा तथ्यों की छान–बीन करना होता है। इसका उद्देश्य तथ्यों के पारस्परिक सम्बन्ध को ज्ञात करना तथा तथ्यों के सम्बन्ध में अनुमान लगाना और निष्कर्ष निकालना है। प्रस्तुत खोज की जानकारी के आधार पर मेरे द्वारा निम्न संख्या शास्त्र के तरिके प्रयोग लाएः–

1. **M**
2. **S.D.**
3. **t test**
4. **r**

शोध का प्रत्याशित सहयोग

प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से शोधार्थी अध्ययन आदत के नये आयामों को खोलेगा जिनमें अध्ययन आदतों के निर्माण में उपलब्धि अभिप्रेरणा के अंतरक्रियात्मक संबंधो के आलोक में व्यक्तित्व के विभिन्न आयामो का उद्घाटन करना प्रस्तुत शोध का लक्ष्य है जिससे व्यक्तित्व की उपयोगिता एवं सार्थकता को नयी दिशा मिलेगी।

अध्यायवार विवरण

अध्याय–1		**प्रस्तावना**
	1.1	भुमिका
	1.2	शोध कथन
	1.3	शोध में प्रयुक्त चरों की व्याख्या
	1.4	शोध के उद्देश्य
	1.5	शोध परिकल्पना
	1.7	शोध का परिसीमन
अध्याय–2		**सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण**
	2.1	भूमिका
	2.2	साहित्य सर्वेक्षण का अर्थ एवं परिभाषा
	2.3	साहित्य सर्वेक्षण का महत्व
	2.4	साहित्य सर्वेक्षण के श्रोत
	2.5	संबंधित शोध विषय में विदेशो में किए गए शोध का साहित्य सर्वेक्षण
	2.6	संबंधित शोध विषय में भारत में किए गए शोध का साहित्य सर्वेक्षण
	2.7	शोध सर्वेक्षण समीक्षा
अध्याय–3		**अनुसंधान शोध अभिकल्प**
	3.1	शोध प्रारूप
	3.3	प्रस्तुत शोध हेतु शोध विधि का चयन
	3.4	शोध की जनसंख्या
	3.5	प्रस्तुत शोध हेतु चयनित उपकरण एवं प्रशासन
	3.6	चयनित शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां

अध्याय–4		**प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या**
	4.1	तथ्यों का प्रारूप
	4.2	तथ्यो की विवेचना
	4.3	प्रदत्त विश्लेषण प्रक्रिया
	4.4	प्रदत्तो का विश्लेषण
अध्याय–5		**निष्कर्ष एवं भौक्षिक निहितार्थ**
	5.1	अध्ययन के निष्कर्ष
	5.2	प्रस्तुत शोध का शैक्षिक निहितार्थ
	5.3	भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट

ग्रंथ की सूची

लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक का नाम	वर्ष
डा0 एस0 पी0 गुप्ता	उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान	शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद	2010
डा0ए0वी0 भटनागर और डा0 अनुराग भटनागर	शैक्षिक मनोविज्ञान एवं अधिगम प्रक्रिया	आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ	2013
रमन बिहारी लाल	शिक्षा मनोविज्ञान एवं भौक्षिक मापन	आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ	2014
डा0 रामशकल पाण्डेय	शिक्षा मनोविज्ञान	आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ	2007
डा0 डी0एन0 श्रीवास्तव	बाल मनोविज्ञानः बाल विकास	श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा	2012
डा0 डी0एन0 श्रीवास्तव	सांख्यिकी एवं मापन	अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा	2009
डा0 राकेश कु0 शर्मा	अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया	अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा	2009
चतीन्द्र ठाकुर	समावेशी शिक्षा	अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा	2018
डा0एस0पी0 गुप्ता	आधुनिक मापन एवं मुल्यांकन	शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद	2010
डा0एस0पी0 गुप्ता	अनुसंधान संदर्शिका	शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद	2017
अरूण कु0 सिंह	शिक्षा मनोविज्ञान	भारती भवन, पटना	2011
पी0एन0राम	अनुसंधान परिचय	लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा	2017